हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 128

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। कुछ उत्तरों को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य की रचना का समयकाल 9वीं से 13वीं सदी के मध्य माना जाता है। इस समय की रचनाओं के अर्द्धमागधी अपभ्रंश की ओर झुकाव की प्रवृत्ति अधिक है।

यद्यपि शब्दों के स्तर पर अनेक रचनाएँ खड़ी बोली हिन्दी के प्रारंभिक स्वरूप को प्रदर्शित करती दिखती हैं। उदाहरणस्वरूप -

"नौ लख पातर आगे नाचै पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै तब अंतरि बसै भंडारा।"

यहाँ पर संख्याओं के पूर्ण विकास की प्रवृत्ति खड़ी बोली हिन्दी के ही समान है।

इसी प्रकार खड़ी बोली के समान 'ण' वर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का बहुतायत से उपयोग खड़ी बोली के प्रारम्भिक स्वरूप को दिखाता है। 'न' के स्थान पर 'ण' का उपयोग - एक उदाहरण

"जाण के अजाणि होय बस त् ते पढ़ाई
चेला होइयों हुआ लाभ, गुरु होइयो आणि"।।

इस प्रकार नाथ साहित्य के विभिन्न स्वरूपों में खड़ी बोली का हिन्दी का प्रारम्भिक स्वरूप देखा जा सकता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृत से सरलीकरण के विकास के क्रम में अपभ्रंश की कालिक अवस्था 500 ई से 1100 ई के मध्य मानी जाती है।

कारक व्यवस्था :-

→ संस्कृत की विभक्तियों के स्थान पर निर्विभक्तिक प्रयोग शुरू हो गये। प्रतिपादक स्वरांत होने लगे।

उदा. जगत् > जग

→ परसर्गों का स्वतन्त्र विकास प्रारम्भ हो गया।

→ एक ही प्रत्यय से कई कारकों का प्रयोग उदाहरणस्वरूप 'हिं' प्रत्यय से करण, अपादान इत्यादि का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⇒ कर्ता, कर्म, करण, अधिकरण इत्यादि कारकों के प्रयोग परिष्कृत हुए।

⇒ वाक्य संरचना भी कारक व्यवस्था के अनुसार संस्कृत से पृथक, परसर्गों पर आधारित होने लगी।

इस प्रकार अपभ्रंश के व्याकरणीय संरचना एवं विकास में कारक व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थापना एवं कब और मंत्रालय की बताएँ।

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के शब्द संरचना, पारिभाषिक शब्दों के वृहत कोष की उपलब्धता एवं सरकारी कार्यों में सुलभ प्रयोग जैसे उद्देश्यों को ध्यान में रखकर स्वतन्त्रता के पश्चात सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये गये।

इसी सम्बन्ध में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना भी की गई। इस संस्थान के माध्यम से -

→ सरकारी ~~काम~~ काज की भाषा में हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास

→ हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली पर शोध कार्य

→ विभिन्न हिन्दी के कार्यक्रमों, कार्यशालाओं का देश भर में आयोजन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ सरकारी कर्मचारियों के लिए विभिन्न हिन्दी की प्रतियोगिताओं का आयोजन

→ सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर विकास से सम्बन्धित सुझाव देना

जैसे कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

यद्यपि आज यह आवश्यकता महसूस की जा रही है कि निदेशालय को अधिक अधिकार सम्पन्न बनाया जाये जिससे कि हिन्दी की समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

05/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

केलॉग का व्याकरण हिन्दी व्याकरण को एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

स्वतन्त्रता के उपरान्त संवैधानिक प्रावधानों के तहत 1965 से हिन्दी पूर्णत: राजभाषा के रूप में सम्पूर्ण देश में स्वीकृत हो जानी थी।

यद्यपि स्वतन्त्रता के बाद अनेक राज्यों यथा पश्चिम बंगाल एवं तमिलनाडु से इस सम्बन्ध में विरोध की लहरें उठीं।

सरकार ने राजभाषा अधिनियम 1963 के माध्यम से स्थिति में संतुलन साधने का प्रयास किया।

इसके तहत 1965 के बाद भी हिन्दी एवं अंग्रेजी का प्रयोग पूर्ववत चलता रहेगा जब तक कि सभी गैर हिन्दी भाषी राज्य केवल हिन्दी के पक्ष के लिए तैयार नहीं हो जाते।

राज्यों को अपनी सरकारी भाषा अपनाने की छूट प्रदान की गयी थी किंतु केन्द्र के साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सरकारी पत्रव्यवहार एवं कामकाज का समन्वय हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में ही हो सकता था।

इस प्रकार राजभाषा अधिनियम 1963 के माध्यम से भारत में राजभाषा को लेकर विवाद में समन्वयकारी हल प्राप्त करने का प्रयास किया गया था।

औसत है।
6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 20

देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। इसके मानकीकरण के कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।—

⇒ कुछ ध्वनियों यथा ॠ, ऌ की उपयोगिता कम रह गई है, इनका लोप करने पर विचार किया जा सकता है।

⇒ 'ख' ख रव की स्थिति की स्पष्टता की आवश्यकता है।

⇒ ख़ ग़ को भी हिन्दी वर्णमाला में स्वीकार करने पर विचार किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

=> डॉक्टर में 'ॅ' का प्रयोग उचित है इस प्रकार इसे सैद्धान्तिक अनुमति देनी चाहिए।

=> अनुस्वार एवं अनुनासिक प्रयोगों के सम्बन्ध में स्पष्टता करनी चाहिए। 'ङ' के स्थान पर '.' का प्रयोग यथा गङ्गा के स्थान पर 'गंगा' का प्रयोग उचित एवं सरल बनाने वाला है।

=> कुछ विद्वान इ, ई, उ, ऊ की ध्वनियों को अि, अी, अु इत्यादि करने की सलाह भी देते हैं।

=> शिरोरेखा का लेखन एवं मुद्रण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दोनों में उपयोग ठीक है, इसे बनाये रखना चाहिए।

⇒ कुछ ध्वनियों यथा 'प्रॉक्टर' के लिए ध्वनि संकेतों की व्यवस्था की जा सकती है।

वस्तुतः अपनी मूल प्रकृति में देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है आवश्यकता यह है कि कुछ संशोधनों से इसके कम्प्यूटर पर कार्य करने को सुलभ लिपि बना दी जाये।

इससे इसकी समृद्धता एवं व्यापकता का विस्तार होगा।

ठीक है

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास को आप संतोषजनक मानते हैं? विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यवसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिन्दी अपने प्रमुख प्रतिद्वन्दी अंग्रेजी भाषा से पीछे नजर आती है।

प्रमुखकारण :-

=> अधिकांश तकनीकों का विकास ब्रिटेन एवं यूरोपीय देशों में हुआ

=> कम्प्यूटर पर कार्य करने की सर्वप्रमुख भाषा अंग्रेजी है।

=> भारत में आधुनिक शिक्षा पद्धति एवं उच्च शिक्षा अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी भाषा को आधार बनाकर शुरू की गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास का प्रयास

=) केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना

=) विधि शब्दावली के लिए पृथक निकाय की स्थापना

=) गृहमंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना = हिन्दी का प्रचार प्रसार

=) सिद्धार्थ कम्प्यूटर एवं सी डैक पुणे द्वारा GIST का सफल प्रयोग

=) वर्तमान में हिन्दी के लिए यूनीकोड की सहायता से कम्प्यूटर पर बहुत से कार्य किये जा रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

=> अनुवाद का कार्य भी लगातार किया जा रहा है।

संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी को वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा बनाने के प्रयास जारी हैं। आवश्यकता है कि इन प्रयासों में अधिक तेजी लायी जाये। जापान के उदाहरण से सबक लेकर हिन्दी को भी अधिक विज्ञानोन्मुख एवं तकनीक परक भाषा बनाया जा सकता है।

6/15

प्रश्नानुरूप गद्य (हिंदी) मॉडल उत्तर देखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

=> इब्राहिम आदिल शाह के समय में ~~सब्भाषा~~ सुन्नी धर्म का प्रभाव बढा इससे ईरानियों का प्रभाव कम हुआ एवं दक्खिनी हिन्दी को विकास का मौका मिला।

=> अली आदिल शाह द्वितीय के शासनकाल में अनेक कवियों द्वारा दक्खिनी हिन्दी का विकास किया गया।

=> अनेक कवियों द्वारा फारसी के शब्दों में 'हारा' प्रत्यय लगाकर हिन्दी के नये

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शब्दों यथा बूझनहारा का विकास किया गया।

=) इस वंश के शासक कलाप्रेमी एवं विद्यात्यसनी थे, 'नवरस' नामक ग्रंथ की रचना हुई एवं इन्होंने दक्खिनी हिन्दी के विकास की परिस्थितियां उपलब्ध कराई

इस प्रकार राजकीय सम्मान एवं प्रोत्साहन, कलाप्रेमी शासकों की उदारता, तत्कालीन कवियों की रुचि एवं कुछ समय के लिए राजभाषा बनाये जाने की परिस्थितियों तथा व्यापार एवं आर्थिक क्रियाविधियों के माध्यम से हिन्दी एवं दक्षिण की भाषाओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के मेल से दक्खिनी हिन्दी समृद्ध होकर निकली।

8/18

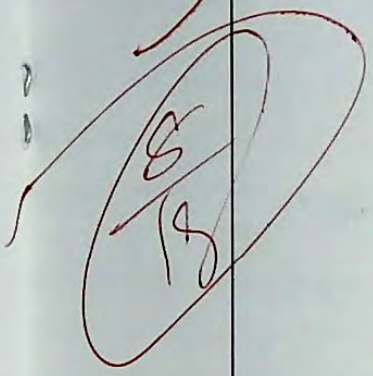

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की राधा

हिंदी साहित्य में राधा के चरित्र का वर्णन कवियों का प्रिय विषय रहा है। विद्यापति, सूरदास तथा धर्मवीर भारती समेत अनेक रचनाकारों ने राधा को अपने रचनाकर्म का विषय बनाया है।

विद्यापति की राधा एक युवती के रूप में प्रस्तुत होती है। राधा कृष्ण के रूप पर मंत्रमुग्ध है, वह कहती है-

"ए सखि देखल एक अपरूप
सुनयति मानवि सपन सरूप।"

राधा का कृष्ण के प्रति प्रेम एकनिष्ठ है वे तो जीवन भर श्री कृष्ण को निहारती रहना चाहती है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जनम अवधि भर रूप निहारल
नयन न तिरपति भेल।"

राधा के मन के साथ-साथ विद्यापति ने राधा के अपार रूप की सुंदरता का बखान भी किया है, वे राधा के अंगों की शोभा का वर्णन करते हुए कहते है-

"जहँ जहँ पग युग धरई तहँ तहँ सरोरुह झरई
जहँ जहँ झलकत अंग, तहँ तहँ बिजुरि तरंग।"

यद्यपि आचार्य शुक्ल जैसे कुछ विद्वानों ने राधा के इस रूप वर्णन पर आपत्ति उठाई है तो वही जार्ज ग्रियर्सन ने राधा के इस रूप वर्णन को जीवात्मा का परमात्मा से मिलन की कथा के रूप में प्रस्तुत किया है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मुक्त छन्द

हिन्दी साहित्य में विभिन्न कवियों के द्वारा छंदों की विविध परम्परा का प्रयोग किया जाता रहा है।

मुक्त छन्द का प्रयोग मुख्यत: 'निराला' द्वारा हुआ। वे कहते हैं कि मनुष्यों की भाँति कविता की भी मुक्ति होती है।

उनके अनुसार मुक्त छन्द का तात्पर्य छंद से मुक्ति नहीं है बल्कि लय से युक्त काव्य से है। छंद के अनुसार कविता नहीं होनी चाहिए बल्कि कविता के लय के अनुसार छंद की व्यवस्था होनी चाहिए।

निराला जिस प्रकार छायावाद की स्वातन्त्र्य चेतना से युक्त थे जिसमें समाज से नहीं समाज में स्वतन्त्रता की प्रबल भावना निहित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

थी, उसी प्रकार कविता के दृष्टिकोण से वे छंदों के विषय में विचार रखते हैं।

मुक्त छंद कविता को लययुक्त बनाकर उसे छंद के अनुशासन को तोड़ने की अनुमति प्रदान करते हैं।

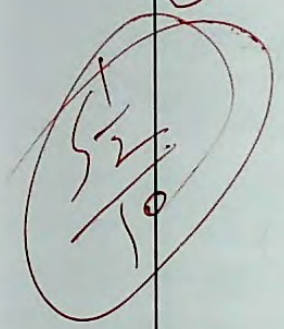

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

हिन्दी साहित्य में नारीवादी लेखिकाओं की सशक्त समकालीन आवाजों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अत्यन्त सम्मान से लिया जाता है।

पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सशक्त नारी चरित्रों का सृजन किया है। उन्होंने नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं का एक नारी की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अनुभव अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

पुष्पा जी के उपन्यासों की भाषा प्रवाहयुक्त एवं बोधगम्य बनी रही है। संवाद योजना में संवाद छोटे, गतिशील एवं चुस्त प्रकृति के दिखाई देते है।

कथानक की दृष्टि से भी आपके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यासों में विविधता दिखाई देती है। चरित्रों की स्वाभाविक प्रस्तुति एवं उनको विकास का अवसर प्रदान कर पाठक को उपन्यासों में डूबकर पढ़ने का आस्वादन प्राप्त होता है।

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य नारी जीवन के सहज भावों का उन्मुक्त चित्रण है, जो कृष्णा जी के लगभग सभी उपन्यासों में दिखाई देता है। इस दृष्टि से आप कृष्णा सोबती के नारीवाद परम्परा के प्रसार की अग्रणी संवाहिका सिद्ध हुई है।

2/10

महत्वपूर्ण नाम / प्रमुख उपन्यासों का उल्लेख करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य का रीतिकाल मुख्यतः श्रृंगार प्रधान काव्य की रचना के लिए प्रसिद्ध है। घनांनंद रीतिकाल के रीतिमुक्त परम्परा के कवि रहे हैं।

घनानंद का काव्य शिल्प उनकी संवेदना के अनुसार विकसित हुआ है। जहाँ रीतिसिद्ध परम्परा के बिहारी अपने काव्य में भाषा की समाहार क्षमता, अद्भुत बिम्ब योजना, उत्कृष्ट समास शक्ति एवं अलंकार योजना के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास करते है- उदाहरणस्वरूप
"कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे मौन में करत है नयनन ही सो बात।"
तो वही घनांनंद अपने भावों की गहराई, भावनाओं की उत्कृष्टता को अपने वियोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

श्रृंगार के माध्यम से प्रकट करते हैं-
"उजाड़िन बसी है हमारी अँखिया"

घनानंद अपने शब्द चयन एवं माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा के उपयोग से अपने काव्य को रीतिकाल में सर्वश्रेष्ठता की दावेदारी के सम्मुख ले जाते हैं।

उनकी अलंकार क्षमता, प्रतीक योजना एवं बिम्ब निर्माण क्षमता से ओत-प्रोत उनका काव्य उनके काव्यकर्म की उत्कृष्टता को प्रकट करता है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

धर्मवीर भारती द्वारा लिखित अंधायुग नाटक अपनी मूल कथ्य एवं शिल्पगत नवीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने द्वितीय विश्वयुद्ध एवं उसके बाद के दौर की मानसिक अवस्था को व्यक्त करने का प्रयास किया है। एक उदाहरण-

" जिसको तुम कहते हो प्रभु
उसने जब चाहा
मर्यादा को अपने हित में बदल लिया
वंचक है वो।"
(गांधारी का कथन)

लेखक द्वारा लघुमानव वाद, अजनबीपन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आत्मविश्वास, संशयबोध, तथा आजादी के बाद उत्पन्न हुए मोहभंग की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति को अपने नाटक के माध्यम से किया है।

नाटक के तत्वों यथा चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, रंगमंच संकेत, कथानक इत्यादि की दृष्टि से भी यह नाटक नवीनता एवं मौलिकता का संगम है।

नाटक को हिन्दी साहित्य में प्रमुखता प्रदान करने में अंधा युग जैसी रचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) लोकजागरण के काव्य के रूप में भक्तिकाव्य का मूल्यांकन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाव्य, ऐतिहासिक रूप से मध्यकाल के दौरान पोषित एवं पल्लवित हुआ है। ऐसे में भक्तिकाव्य के सगुण धारा के कृष्ण एवं राम काव्यधारा तथा निर्गुण धारा के संत एवं सूफी काव्यधारा के कवियों द्वारा लोकजागृति के काव्यों की बहुमूल्य शृंखला सृजित की गई है।

संतकाव्य धारा के कवियों यथा कबीर, रैदास, मलूकदास इत्यादि के द्वारा आडम्बरों का विरोध, जाति-व्यवस्था की कठोर आलोचना एवं प्रेम को मानवता के सार के रूप में स्थापित किया गया।

कबीर ने पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़ तथा काँकर पाथर जोरि के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'मस्जिद लई बनाय' के माध्यम से धार्मिक आडम्बरों पर कुठाराघात करते हैं, तो वही 'जाति-पाति पूछे नहि कोई' से लेकर 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय' के माध्यम जाति-पात को छोड़कर प्रेम मार्ग पर बढ़ने का उद्बोधन करते हैं।

मलूकदास "दास मलूका कह गये सबके दाता राम" के माध्यम से आलस्य एवं समाज की जड़ता पर व्यंग्य करते हैं तो वही रैदास "रामनाम की सेवा कीन्हि कहि रविदास चमारा" के नाम से निचली जातियों को आत्मविश्वास से भरकर भक्ति को अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

इसी प्रकार सगुण धारा के कवियों द्वारा समाज में व्याप्त बुराइयों का समग्र

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णन एवं समाधान भी प्रस्तुत किया जाता है।

तुलसीदास 'रामचरितमानस' के माध्यम से पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक समरसता को मध्यकाल में उभारते हैं तो वहीं जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवसि नरक अधिकारी के माध्यम से राजनीतिक चेतना को जाग्रत करने का भी प्रयास करते हैं।

सूरदास अपने काव्य में प्रेम की अविरल धारा का प्रवाह तथा गोपियों के माध्यम से नारी स्वतन्त्रता को अभिव्यक्त करते दिखते हैं।

यद्यपि इस लोकजागरण पर कुछ मध्यकालीन सीमाओं को देखा जा सकता है कबीर की नारी की झांई पड़त अंधा होत भुजंग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा तुलसी की नारी दृष्टि पर भी ऐसे आक्षेप विद्वान करते हैं।

समग्र मूल्यांकन के रूप में देखें तो मध्यकाल की परिस्थितियों के बावजूद कबीर का तर्क, तुलसी की सांस्कृतिक समन्वय की चेतना, सूफियों की गंगा-जमुनी तहजीब की आधारशिला एवं सूर का प्रेम सम्पूर्ण समाज को समन्वित रूप से जागरण की ओर ले गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी कथा-साहित्य को काशीनाथ सिंह के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी कथा साहित्य के आधुनिक रचनाकारों में काशीनाथ सिंह का बहुमूल्य योगदान रहा है।

काशीनाथ सिंह की रचनाएँ मुख्यतः समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हुई दिखाई देती है जो आज तक विकास की धारा से नहीं जुड़ पाया है, पिछड़ा है, अशिक्षित है।

काशी का अस्सी, रेहन का रहघर जैसी रचनाएँ काशीनाथ सिंह के ~~काव्य~~ कथाकर्म की उत्कृष्टता को प्रकट करती है। यदि संवेदना के स्तर पर देखा जाये तो जो धारा प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रसारित की थी वे समकालीन हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर एवं काशीनाथ सिंह के माध्यम से आगे बढ़ी।

सामाजिक प्रगतिवादी धारा की समकालीन कहानियों एवं उपन्यासों के उत्कृष्ट कार्य तथा सहज भाषायी एवं शिल्पगत कुशलता काशीनाथ सिंह की एक अन्य विशेषता रही है।

हिन्दी साहित्य की इसी विशिष्ट सेवा के कारण आपकी विभिन्न रचनाओं को पुरस्कृत भी किया गया।

इस प्रकार काशीनाथ सिंह समकालीन साहित्यकारों में एक उत्कृष्ट कोटि के रचनाकार रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मुक्तिबोध की काव्यभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध की कविताओं का प्रमुख स्वर उनके प्रगतिवाद एवं नई कविता के दौर की रचनाकर्म के रूप में देखा जा सकता है।

मुक्तिबोध एक मार्क्सवादी कवि रहे है परन्तु मार्क्सवाद की जड़ विचारधारा से वे कभी बंधना स्वीकार नहीं करते है।

यही कारण है कि उनकी काव्य भाषा बोधगम्य तो है परन्तु उन्होंने फ़ैन्टसी शिल्प का सुन्दर प्रयोग किया गया है। उदाहरणस्वरूप -

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ "

वस्तुत: फ़ैन्टेसी शिल्प के प्रयोग के माध्यम से उन्होंने यथार्थ के विवरण से स्वयं को बचा लिया है एवं कम शब्दों में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपनी बात सटीकता से रख पाये है।

शब्द चयन के स्तर पर मुक्तिबोध प्रयोगधर्मी रहे है उनकी भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते है। उदा.

" टिक टिक टिक
लेट मी स्पीक "

वे संस्कृत प्रधान (तत्सम) भाषा के साथ अंग्रेजी शब्दों को सहजता से मिश्रित कर देते है।

बिम्ब निर्माण में भी वे सिद्ध हस्त है

उदा. " एक क्रुद्ध मंत्रोच्चार
अथवा शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार "

प्रतीक योजना का भी निर्वाह उनके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य कर्म की एक प्रमुख विशेषता रही है। -

"पिस गया वह भीतरी
औ बाहरी
दो कठिन पाटों के बीच
ऐसी ट्रैजडी है नीच।"

वस्तुत: लय एवं छन्द के स्तर पर बहुत प्रभावित न करने के बावजूद भी मुक्तिबोध की भाषा अपने कथ्य को सम्पूर्णता से व्यक्त करती है इसी से प्रभावित होकर निर्मला जैन ने मुक्तिबोध की भाषा को अनगढ़ तेजोदीप्त कहा है।

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में 19वी सदी के उत्तरार्द्ध में उपन्यास लेखन की शुरुवात हुई। 1880 के दशक में किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा लिखित परीक्षागुरु को पहला उपन्यास माना जाता है।

प्रारम्भिक उपन्यास लेखकों द्वारा रोमांच, प्रेम एवं जादुई उपन्यासों पर अधिक लेखन हुआ यथा देवकीनंदन खत्री कृत चन्द्रकान्ता

परन्तु इसके बाद कुछ उपन्यासों यथा 'धराऊ चरित्र', बलवंत भूमिहार में उपन्यास यथार्थ से जुड़ने लगे।

हिन्दी उपन्यास का यथार्थवाद से वास्तविक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्बन्ध प्रेमचन्द के आगमन के साथ माना जाता है। प्रेमचन्द के आरम्भिक उपन्यासों यथा सेवासदन में यथार्थ का तो चित्रण हुआ परन्तु समाधान के रूप में आदर्शवाद हावी रहा।

शुरुवाती प्रेमचन्द गाँधीवाद एवं हृदय परिवर्तन से प्रभावित रहे जो उनके उपन्यासों निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि में -अनाधिक मात्रा में दिखाई देती है।

यद्यपि 1936 आते-आते प्रेमचन्द गोदान के माध्यम से सम्पूर्ण यथार्थ को विस्तृत चित्रण करने में सफल रहे।

प्रेमचन्द के उपरान्त मनोविश्लेषणवादी धारा के जैनेन्द्र, अज्ञेय एवं इलाचन्द जोशी ने भी अपेक्षाकृत कम में यथार्थवाद को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ही महत्व प्रदान की।

वस्तुतः उपन्यास साहित्य की सभी धाराओं यथा समकालीन प्रगतिशील धारा तक अब यथार्थ का ही विषय बन चुका है।

नारीवादी लेखकों कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, दलित विमर्श के लेखकों यथा श्रीनिवास्य इत्यादि द्वारा भी यथार्थ का ही अंकन उपन्यासों के माध्यम से हुआ है।

इस प्रकार अपने प्रारम्भिक सफर से एक लम्बा अन्तराल तय करते हुए हिन्दी उपन्यास आज यथार्थ की निर्मम प्रस्तुति रखने का आधार बन चुका है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के समादृत होने के कारणों का उद्घाटन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह दिनकर एवं मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों को राष्ट्रकवि की उपाधि दी जाती है। ध्यातव्य है कि यह एक प्रतीकात्मक उपाधि है जो कवि के रचनाकर्म की उत्कृष्टता, सुलभता एवं जनसामान्य के मनोभावों को उभारने की क्षमता का द्योतक होती है।

दिनकर राष्ट्र कवि के रूप में

ओजगुण के कवि

दिनकर का ओज गुण उन्हें जनसामान्य में लोकप्रिय बनाता है। जनता सहज ही अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति उनके काव्य में पाती है। उदाहरणस्वरूप –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के पोषक

दिनकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा को पोषित एवं पल्लवित करने वाले कवि है वे कहते है-

"छीना हो स्वत्व कोई, और तू त्याग तप से काम ले
यह पाप है।"

सहज जनभावनाओं के कवि :-

दिनकर समानता के पोषक है, वे
जब तक मनुज मनुज का सुखभाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा
के माध्यम से सहज जनभावनाओं की प्रस्तुति करते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने देशप्रेम, समानता की भावना, राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के पोषक स्वरूप में दिनकर निःसंदेह राष्ट्रकवि होने की समस्त कसौटियों पर खरे उतरते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद के आधार स्तम्भ 'निराला' अपनी प्रगतिचेतना के लिए भी जाने जाते हैं।

निराला की प्रगतिचेतना का एक स्तर उनके काव्यकर्म की कथावस्तु एवं संवेदना में दिखाई देता है तो दूसरा उनके शिल्पगत नवीनता एवं वैशिष्ट में भी।

निराला ने राम की शक्तिपूजा के माध्यम से जहाँ एक ओर आशा-निराशा, अंधकार प्रकाश का द्वन्द दिखाया है-

"है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार।"

तो वहीं कुकुरमुत्ता के माध्यम से अभिजात्य वर्ग पर प्रहार करते भी दिखते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"अबे सुन बे गुलाब
पाली जो खुशबू रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।"

जूही की कली से शुरू हुआ उनका सफर वह तोड़ती पत्थर, सरोज स्मृति तथा राम की शक्तिपूजा एवं कुकुरमुत्ता तक पहुँचता है।

शिल्पगत स्तर पे एक ओर खड़ी बोली में अद्भुत समास रचना तथा मुक्त छंद की छटा बिखेरते हैं तो वहीं हिन्दी की शब्दरचना को उत्कृष्ट भी बनाते हैं।

इस प्रकार निराला अपने संवेदनात्मक एवं शिल्पगत सौन्दर्य दोनों में प्रगतिशील रहे हैं।

7/15

गहराई लाएं
मॉडल उत्तर देखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation